# परिवहन क्षेत्र के डिकार्बोनाइज़ेशन के लिये फोरम

## प्रिलिम्स के लिये

नीति आयोग, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, वायु प्रदूषण, पेरिस जलवायु समझौते, राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान, जैव विविधता कन्वेंशन

## मेन्स के लिये

परिवहन क्षेत्र के डिकार्बोनाइज़ेशन फोरम की स्थापना का उद्देश्य एवं अपेक्षित लाभ तथा इससे संबंधित विभिन्न पहलें

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में नीति आयोग **(NITI Aayog)** और वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट **(World Resources Institute-WRI),** द्वारा संयुक्त रूप से भारत में **'फोरम फॉर डिकार्बोनाइज़िंग ट्रांसपोर्ट' (Forum for Decarbonizing Transport)** को लॉन्च किया गया था।

- **WRI इंडिया** विधिक रूप से इंडिया रिसोर्स ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत एक **स्वतंत्र चैरिटी** है जो **पर्यावरण** की दृष्टि से **स्वस्थ और सामाजिक** रूप से न्यायसंगत विकास को बढ़ावा देने के लिये **वस्तुनिष्ठ जानकारी और व्यावहारिक प्रस्ताव** प्रदान करता है।
- **नीति आयोग सरकार के लिये एक सलाहकार थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है और इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री करता है। इसने** योजना आयोग **का स्थान लिया।**

## प्रमुख बिंदु

**परिचय :**

- यह मंच राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) - एशिया के लिये परिवहन पहल (NDC-TIA) परियोजना का एक हिस्सा है, जो प्रभावी नीतियों की एक सुसंगत रणनीति विकसित करने और क्षेत्र में कार्बन मुक्त परिवहन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिये एक बहु-हितधारक मंच के गठन पर केंद्रित है।
    - NDC-TIA **सात संगठनों का एक संयुक्त कार्यक्रम** है जो **चीन, भारत और वियतनाम** को अपने-अपने देशों में **परिवहन को कार्बन मुक्त करने के लिये एक व्यापक दृष्टिकोण** को बढ़ावा देने में संलग्न करेगा। यह परियोजना **अंतर्राष्ट्रीय जलवायु पहल (IKI)** का हिस्सा है।
    - IK **जर्मनी के जलवायु वित्तपोषण** और जैव विविधता कन्वेंशन के फ्रेमवर्क में वित्तपोषण प्रतिबद्धताओं का एक प्रमुख तत्त्व है।
- **भारत में परिवहन क्षेत्र को स्वच्छ बनाने** के लिये यह विविध विचारों को साथ लाने और एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने हेतु **माध्यम के रूप में कार्य** करेगा।

**उद्देश्य :**

- इस परियोजना का उद्देश्य एशिया में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन **(परिवहन क्षेत्र)** के चरम स्तर (दो डिग्री से नीचे के लक्ष्य के अनुरूप) को नीचे लाना है जिसके परिणामस्वरूप ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की वजह से संकुलन और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ होती हैं।

**अपेक्षित लाभ :**

- यह **व्यापार के एक अभिनव मॉडल के विकास** में मदद करेगा जिससे लक्षित परिणाम प्राप्त होंगे और भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी क्षेत्र का समग्र विकास होगा।
- यह **फोरम समान नीतियों के विकास** के लिये **संवाद** शुरू करने और **परिवहन क्षेत्र में उत्सर्जन को कम** कर विशिष्ट परिणाम प्राप्त करने में मदद हेतु भी एक मंच प्रदान करेगा।

**आवश्यकता:**

- भारत में एक **विशाल और विविध परिवहन क्षेत्र** है, जो **कार्बन डाइऑक्साइड (CO2)** का उत्सर्जन करने वाला तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है।
- [**अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी**]() **(IEA)**, 2020 और **पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, 2018** के डेटा से पता चलता है कि **परिवहन** क्षेत्र में शामिल **सड़क परिवहन, कॉर्बन डाइऑक्साइड के कुल उत्सर्जन में 90% से अधिक का योगदान** देता है।
- बढ़ते [**शहरीकरण**]() के साथ वाहनों का आकार यानी **वाहनों की बिक्री की संख्या तेज़ी** से बढ़ रही है। अनुमान है कि **2030 तक वाहनों की कुल संख्या दोगुनी** हो जाएगी।
- इसलिये **2050** के लिये निर्धारित [**पेरिस जलवायु समझौते**]() के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु भारत में परिवहन क्षेत्र को एक **डिकार्बोनाइज़ेशन पथ की ओर अग्रसर** होना आवश्यक है।

**संबंधित पहलें:**

- [फेम योजना]()
  - यह 'नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन' प्लान का एक हिस्सा है। इसका मुख्य उद्देश्य सब्सिडी प्रदान करके इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहित करना है।
  - हाल ही में केंद्र सरकार ने इको-फ्रेंडली वाहनों को बढ़ावा देने के मद्देनज़र 'फेम-II' (फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल्स) योजना के तहत इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स पर सब्सिडी को 50% बढ़ाने का फैसला किया है।
- [PLI योजना]() **के तहत प्रोत्साहन:**
  - यह योजना पिछले वर्ष विभिन्न उद्योगों के लिये शुरू की गई थी, जिसमें पाँच वर्ष की अवधि में ऑटोमोबाइल और ऑटो-कंपोनेंट उद्योग के लिये 57,00 करोड़ रुपए से अधिक का परिव्यय शामिल था।
  - इसके तहत 'एडवांस सेल केमिस्ट्री बैटरी स्टोरेज' निर्माण के लिये लगभग 18,000 करोड़ रुपए स्वीकृत किये गए हैं।
  - इन प्रोत्साहनों का उद्देश्य [**इलेक्ट्रिक वाहनों**]() (EV) के स्वदेशी विकास को प्रोत्साहित करना है, ताकि उनकी अग्रिम लागत को कम किया जा सके।
- **नवीकरणीय मोटर वाहन उद्योग:**
  - भारत वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण और आपूर्ति केंद्र बनने के उद्देश्य से एक घरेलू नवीकरणीय मोटर वाहन उद्योग के निर्माण में लगा हुआ है।
    - बैटरी चालित इलेक्ट्रिक वाहन और ईंधन-सेल वाहन प्रौद्योगिकियाँ वर्ष 2050 तक देश में जीवाश्म से चलने वाले वाहनों को पीछे छोड़ने के लिये पूरी तरह तैयार हैं।

## आगे की राह

- भारत के पास अपने शहरी परिवहन क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने का एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। मोटर वाहनों के विद्युतीकरण के साथ-साथ पैदल, साइकिल और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देकर देश के लिये सही रणनीति अपनाई जानी चाहिये।
- देश भर में इलेक्ट्रिक वाहनों का लाभ उठाने और उन्हें कारगर बनाने हेतु विभिन्न हितधारकों के लिये एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है।
- इन हितधारकों के बीच एक समन्वित प्रयास निवेश को सक्षम बनाने, प्रोत्साहित करने और उद्योग का उचित संचालन सुनिश्चित करने में मदद करेगा।

## स्रोत: पीआईबी

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/forum-for-decarbonisation-of-transport-sector